द्वितीयः पाठः अन्योक्तिविलासः

अभ्यास

(अ) तथ्यात्मक

1. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) नितरां नीचोऽस्मीति ..... परेषां गुणग्रहीतासि।।

[**नितराम्** = बहुत, अत्यधिक, **नीचोऽस्मीति** = मैं नीचा (गहरा) हूँ, **खेदं** = दु:ख, **कदापि** = कभी भी, **मा कृथा**: = मत करो, **यतः** = क्योंकि, **परेषां** = दूसरों के, **गुणग्रहीतासि** = गुणों को ग्रहण करने वाले हो, रस्सियों को ग्रहण करने वाला।]

सन्दर्भ– प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृत खंड' के 'अन्योक्तिविलासः' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– हे कुएँ! (मैं) अत्यधिक नीचा (गहरा) हूँ। इस प्रकार कभी भी दु:ख मत करो, क्योंकि (तुम) अत्यंत सरस हृदय वाले (जल से पूर्ण) हो (और) दूसरों के गुणों (रस्सियों) को ग्रहण करने वाले हो। अर्थात् हे गंभीर पुरुष! 'मैं अत्यंत तुच्छ हूँ' ऐसा समझकर तुम मन में खेद मत करो, क्योंकि तुम सरस हृदय वाले हो और दूसरे के गुणों को ग्रहण करते हो।

(ख) कोकिल! यापय ..... रसालः समुल्लसति।

[**कोकिल** = कोयल, **यापय** = बिताओ, **विरसान्** = नीरस, **करीलविटपेषु** = करील के वृक्षों पर, **यावन्मिलदलिमालः** = जब तक भौंरों की पंक्ति से युक्त, **रसालः** = आम, **समुल्लसति** = सुशोभित होता है।]

सन्दर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– हे कोयल! जब तक भौंरों की पंक्ति से युक्त कोई आम का वृक्ष विकसित हो, तब तक तुम अपने नीरस दिनों को करील के वृक्षों पर ही बिताओ अर्थात् जब तक अच्छे दिन आएं व्यक्ति को बुरे दिन किसी प्रकार व्यतीत कर लेने चाहिए।

(ग) रे रे चातक! ..... दीनं वचः।।

[**सावधानमनाना** = सावधान चित्त से, **श्रूयताम्** = सुनिए, **अम्भोदा** = बादल, **नैतादृशाः** = ऐसे नहीं हैं, **वृष्टिभिरार्द्रयन्ति** = वर्षा के द्वारा गीला कर देते हैं, **वसुधा** = पृथ्वी को, **वृथा** = व्यर्थ, **यंयं** = जिस जिसको, **पुरतो** = सामने, **मा ब्रूहि** = मत कहो, **दीनं वचः** = दीनता के वचन।]

सन्दर्भ– पूर्ववत्

व्याख्या– हे मित्र चातक! सावधान मन से क्षणभर सुनो। आकाश में बहुत-से बादल रहते हैं, पर सभी ऐसे (उदार) नहीं होते। कुछ तो वर्षा से पृथ्वी को गीला कर देते हैं, (पर) कुछ व्यर्थ में गरजते हैं (तुम) जिस-जिसको देखते हो उस-उसके सामने दीनता के वचन मत कहो अर्थात् संसार में अनेक व्यक्ति धनवान व समर्थ हैं, परंतु सभी उदार नहीं होते। अतः तुम प्रत्येक से आशा करते हुए उसके सामने हाथ मत फैलाओ, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति दानी नहीं होता।

(घ) न वे ताडनात् ..... गुञ्जया तोलयन्ति।।

[**ताडनात्** = पीटने से, **वह्निमध्ये** = आग के बीच में, **विक्रयात** = बेचने से, **क्लिश्यमानोऽहमस्मि** = मैं दु:खी नहीं हूँ, **तदेंक** = वह एक है, **गुञ्जयाः** = रत्ती से, **तोलयन्ति** = तौलते हैं।]

सन्दर्भ– पूर्ववत्

व्याख्या– मैं (स्वर्ण) न तो पीटे जाने से, न अग्नि में तपाए जाने से और न बेचे जाने से दु:खी होता हूँ। मुझे स्वर्ण को एक ही दु:ख है कि लोग मुझको रत्ती से तोलते हैं अर्थात् मेरी कितनी भी कठिन परीक्षा ली जाए, मुझे उसमें दु:ख नहीं है, किंतु तुच्छ से मेरी तुलना की जाए, यही दु:ख है।

(ङ) रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति ..... गज उज्जहार।

[**रात्रिर्गमिष्यति** = रात्रि व्यतीत हो जाएगी, **भविष्यति** = होगा, **सुप्रभातं** = सुंदर प्रभात, **भास्वानुदेष्यति** = सूर्य उदित होगा, **हसिष्यति** = खिलेगा, **पङ्कजालिः** = कमलों का समूह, **इत्थं** = इस प्रकार से, **विचन्तयति**= विचार करने पर, **कोशगते द्विरेफे** = कमल कोश में बंद भ्रमर के द्वारा, **हन्त** = दुःख है, **नलिनी** = कमलिनी को, **उज्जहार** = हरण कर लिया।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– (कोई भौंरा कमल में बंद हो गया। वह रातभर यही विचारता रहा कि) 'रात व्यतीत होगी, सुंदर प्रभात होगा, सूर्य उदित होगा, कमलों का समूह खिलेगा।'' दुःख का विषय है कि कमल कोश में बंद भौंरे के विचारमग्न होने पर, किसी हाथी ने कमलिनी को उखाड़ लिया अर्थात् मनुष्य सुख की आशा में अपने दुःख के दिन काटता है, परंतु उसका वह दुःख समाप्त भी नहीं हो पाता कि उसे मृत्यु ग्रस लेती है। व्यक्ति सोचता कुछ है और होता कुछ और है। वस्तुतः उसके ऊपर कुछ भी निर्भर नहीं है। होता वही है जो ईश्वर चाहता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) कूपः किमर्थं दुःखम् अनुभवति?

उ०– कूपः नितरां नीचः अस्ति, अतः सः दुखम् अनुभवति।

(ख) नीर क्षीर विषये हंसस्य का विशेषता अस्ति?

उ०– नीर क्षीर विषये नीर क्षीर-विवेकम् एव हंसस्य विशेषता अस्ति।

(ग) कवि हंस किं बोधयति?

उ०– कवि हंस नीर-क्षीर-विभागे आलस्यं न कर्तुं बोधयति।

(घ) कविः चातकं किम् उपदिशति?

उ०– कविः चातकं उपदिशति यत् सः सर्वेषां पुरतः दीनं वचः न ब्रूयात्।

(ङ) सुवर्णस्य मुख्यं दुःखं किमस्ति?

उ०– जनाः सुवर्णं गुञ्जया सह तोलयन्ति इति सुवर्णस्य मुख्यदुःखम् अस्ति।

(च) भ्रमरे चिन्तयति गजः किम् अकरोत्?

उ०– भ्रमरे चिन्तयति गजः नलिनीम् उज्जहार।

(छ) गजः कां उज्जहार?

उ०– गजः नलिनीम् उज्जहार।

(ज) कवि कोकिलं किम् कथयति?

उ०– कवि कोकिलं कथयति (बोधयति) यत् वसंतकालं यावत् रसालः न समुल्लयति तावत् करीलविटपेषु एव सन्तोषं कर्त्तव्यम्।

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. हे कुएँ! अत्यधिक नीचा हूँ, ऐसा खेद मत करो।

अनुवाद– रे कूप! अहं नितरां नीचः एता खेदं मा कृथाः।

2. सबके सामने दीन वचन न कहो।

अनुवाद– सर्वेषां पुरतः दीनं वचः मा कथयतु।

3. हे कोयल! तुम धैर्य रखो।

अनुवाद– रे कोकिल! त्वं धैर्यं धारय।

4. हे चातक! क्षणभर सुनो।

अनुवाद– रे चातक! क्षणं श्रुतयाम्।

5. अपना कर्तव्य शीघ्र करो।

अनुवाद– स्व कर्तव्यं शीघ्रं कुरु।

6. हे हंस! तुम अपना कार्य करते रहो।

अनुवाद– रे हंस! त्वं स्वकार्यं कुर्वन तिष्ठ।

7. आकाश में बहुत से बादल हैं।

अनुवाद– गगने बहुना नीरद सन्ति।

8. दीन वचन मत बोलो।

अनुवाद– दीनं वचः मा ब्रूहि।

9. सदैव पशु-पक्षियों की सहायता करो।

अनुवाद– सदा पशुस्य-विहगस्य सहायतां कुरु।

(स) व्याकरणात्मक

1. निम्नलिखित क्रियापदों में धातु, लकार, पुरुष व वचन बताइए–

क्रियापद	**धातु**	**लकार**	**पुरुष**	**वचन**
अस्मि	अस्	लट् लकार	उत्तम	एकवचन
श्रूयताम्	श्रु	लोट लकार	प्रथम	द्विवचन
गमिष्यति	गम्	लृट् लकार	प्रथम	एकवचन
भविष्यति	भू	लृट् लकार	प्रथम	एकवचन
गर्जन्ति	गर्ज	लट् लकार	प्रथम	बहुवचन

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए–

सन्धि शब्द	**सन्धि विच्छेद**
कदापि	कदा + अपि
अत्यन्त	अति + अन्त
अधुनान्यः	अधुना + अन्यः
नैतादृशाः	न + एतादृशाः
तदेकम्	तत् + एकम्

3. कमल, हाथी, बादल के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।

कमल – जलजः, सरोजः, नीरजः।

हाथी – गजः, द्विरदः, हस्ती।

बादल – नीरदः, मेघः, घनः।

(द) पाठ्येत्तर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।